SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

भिखारी ठाकुर की रचनाओं में लोकजागरण के स्वर

मेधावी, एम. ए. हिंदी
बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर, बिहार, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Author
मेधावी, एम. ए. हिंदी
E-mail : medhavisingh9435@gmail.com

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 04/02/2025
Revised on : 04/04/2025
Accepted on : 15/04/2025
Overall Similarity : 04% on 05/04/2025

शोध सार

बहुमुखी प्रतिभा के धनी कलाकार भिखारी ठाकुर का समय ब्रिटिश भारत में ''नवजागरण'' से शुरू होकर आजादी के बाद आधुनिक काल में आकर समाप्त होता है लेकिन अपनी रचनाओं व कला के माध्यम से उनके दिए गए संदेश काल की सीमा से परे है। उन्होंने लोक साहित्य और कला को जो ऊँचाई दिये जो ख्याति दिलवाई – उसे कभी भुलाया नहीं जा सकता है। उनकी कला की छाप समाज पर पड़ी उनका ''बेटी–बेचवा'' नाटक देखकर कई गांवों में लोगों ने बेटी बेंचना बंद कर दिया। कई गांवों में खुद बेटियों ने ही बिकने से इनकार करने की हिम्मत दिखाई। उनके सभी नाटक उद्देश्य परक होते थे, कोरा मनोरंजन नहीं। वे अपनी आकर्षक कला से समाज की समस्याओं को ऐसे उठाते थे कि वह श्रोता और दर्शकों को प्रभावित कर लेती थी। उनके नाटक और स्वांग की विशेषता यह थी कि वे सामाजिक कुरीतियों और बुराइयों पर आधारित होते थे जैसेः बाल–विवाह, विधवा जीवन, वेश्या समस्या, गरीबी के कारण बेटी बेंचना, छुआछूत इत्यादि। इन विषयों पर भिखारी ठाकुर गीत और नाटक लिखते थे और उन्हें रोचक बनाकर प्रदर्शित करते थे। उन्होंने अपनी कला में गरीबी, छुआछूत, भेदभाव, ऊंच–नीच, स्त्री और दलितों की दयनीय स्थिति आदि का चित्रण कर लोकजागरण और समाज सुधार का काम किया। यह निश्चय ही सांस्कृतिक और सामाजिक ''नवजागरण'' ही है।

मुख्य शब्द

भिखारी ठाकुर, कलाकार, लोकजागरण, समाज.

जीवन का चित्रण

इस बात स्वीकार करना होगा कि जिस प्रकार मैथिली को विद्यापति के कारण, अवधी को तुलसीदास

और जायसी के कारण तथा ब्रजभाषा को सूरदास के कारण ख्याति मिली, उसी प्रकार भोजपुरी को भिखारी ठाकुर के कारण मिली। भिखारी ठाकुर ने अपनी रचनाओं में जीवन के राग–रंग, हास–परिहास, विरह–मिलन, प्रेम और युद्ध, हँसी–खुशी, दुख–संताप सारे पहलुओं को हृदय की गहराई में उतारकर व्यक्त किया है। उन्होंने अपनी कला के माध्यम से न केवल अपने तत्कालीन समाज को चित्रित किया बल्कि आने वाले समय और समाज का भी संकेत देकर दूरदर्शिता का परिचय दिया।

जिस समय भिखारी ठाकुर को भोजपुरी का शेक्सपियर, अनगढ़ हीरा, लोकनायक, नाट्य सम्राट आदि विशेषणों से सुशोभित किया जा रहा था, उसी समय बिहार के चर्चित एवं निराला जी के समकालीन कवि आचार्य जानकी बल्लभ शास्त्री ने यह कहकर भिखारी ठाकुर को स्थापित किया था कि ''अँग्रेजी के महान नाटककार बर्नार्ड शॉ भी अपनी श्रेष्ठता का डींग हांकना भूल जाएंगे यदि उनकी भेंट भिखारी ठाकुर से हो जाए।''[1]

डॉ कृष्ण देव उपाध्याय कहते हैं– ''जनता की वस्तु को जनता के सामने, जनता के मनोरंजन के लिए प्रस्तुत करके भिखारी ठाकुर ने बड़ी लोकप्रियता प्राप्त की केवल इस एक व्यक्ति ने भोजपुरी का जितना अधिक प्रचार किया, उतना अधिक शायद ही किसी ने किया हो।''[2]

डॉ. केदार नाथ सिंह के विचारानुसार– ''वे सच्चे अर्थों में एक लोक–सजग कलाकार थे, इसलिए कोरा मनोरंजन उनका उद्देश्य नहीं था। उनकी हर कृति किसी–न–किसी सामाजिक विकृति या कुरीति पर चोट करती है और ऐसा करते हुए उनका सबसे धारदार हथियार होता है।''[3]

फर्श से अर्श

भिखारी ठाकुर को अपनी पारिवारिक परिस्थितियों के कारण औपचारिक शिक्षा लेने का अवसर नहीं मिला था लेकिन स्वाध्याय और अनुभव से उन्होंने पढ़ना–लिखना सीख लिया था। वे कैथी लिपि में ही लिखते थे, बाद में छपवाने के लिए उन्हें देवनागरी में उन्होंने लिखवाया। जीविका की तलाश में खड़गपुर, मेदिनीपुर, कलकत्ता, जगन्नाथपुरी आदि शहरों में हाथ–पाँव मारकर भिखारी ठाकुर अपने गाँव लौट आते हैं और अपनी एक नाच पार्टी खोल देते हैं। 1917 में उनकी वह नाच मंडली पूरी तरह से खड़ी हो जाती है और प्रसिद्धि भी प्राप्त कर लेती है। इस समय भिखारी ठाकुर की उम्र महज 30 वर्ष थी।

भिखारी ठाकुर की कला का जादू ऐसा था कि जब असम, बंगाल और देश के बड़े शहरों में नाच होता, तो दूर–दूर से लोग देखने आते। यहाँ तक कि उनकी मंडली की प्रस्तुति के सामने कई बार सिनेमा का रंग फीका पड़ जाता था। उन दिनों यदि वीडियो या टेप रिकार्डर की सुविधा सहज उपलब्ध होती तो वह अनोखी और असली कला से आज भी लोग परिचित होते। लोक कला और साहित्य को एक दिशा तो मिलती ही साथ ही शोधकर्ताओं को भी बहुत सहयोग मिलता। आधुनिक सुविधाएँ सहज उपलब्ध हुईं, तब तक भिखाड़ी और उनके असली नाच का अंत हो चुका था। यदि कुछ बची हुई है तो वह है ''बिदेसिया'' फिल्म में उनकी बुढ़ापे की आवाज में गाया हुआ एक गीतः ''डगरिया जोहत ना हो डगरिया जोहत ना हो डगरिया जोहत नाए बीतल जात अठपहरिया हो डगरिया जोहत नाद्य।''

जिस समय भिखारी ठाकुर लिख रहे थे, उस समय बिहार अलग से कोई प्रांत नहीं था। वह बंगाल ही था, अविभाजित बंगाल। नजदीक का कल कारखानों वाला एक मात्र बड़ा शहर कलकता था। बिहार–उत्तर प्रदेश के लोग कमाने कलकत्ता जाते थे इसीलिए भिखारी ठाकुर की रचनाओं में ''पियवा गइले कलकतबा, ''सजनी'' जैसे गीत और नायक का कलकता पलायन प्रसंग मिलता है भिखारी ठाकुर 25 वर्ष के थे जब बिहार अलग हुआ और भिखारी बिहार के कलाकार के रूप में जाने जाने लगे। लेकिन देश की आजादी के बाद भी कलकत्ता कमाने जाने वालों की परंपरा बदस्तूर जारी रही और उनका ''बिदेसिया'' नाटक का जादू दर्शकों के दिलो दिमाग पर उसी तरह छाया रहा।

रचनाएँ और अभिनय कला के माध्यम से लोकजागरण

भिखारी ठाकुर के प्रसिद्ध नाटकों में बिदेसिया, बिरहा–बहार, बेटी–बेचवा, विधवा–विलाप, गबरघिचोर, कलयुग प्रेम, पुत्र–वध, राधेश्याम बहार, नाई बहार, गंगा स्नान, बुढशाला के बयान, भिखारी शंका समाधान, राम, कृष्ण, शिव आदि के विवाह और भजन कीर्तन आदि हैं।

औपचारिक पढ़ाई न करने के कारण भिखारी को रस, छंद, अलंकार का शास्त्रीय ज्ञान नहीं था लेकिन अपने अनुभव और अभ्यास से काव्य गुण, रस, छंद, अलंकार, बिम्ब, प्रतीक, मिथक और शब्दशक्ति का ज्ञान उन्होंने जो अर्जित किया था, वह अद्‌भुत था, स्तुत्य था। वे चाहते तो रानी सारंगा, सोरठी–बृजाभार, कुँवर विजयी, आल्हा–ऊदल आदि लोक कथाओं पर नाटक और तमाशे कर सकते थे, उनके मित्रों ने पैसे कमाने के लिए ऐसा करने की सलाह भी दी, लेकिन भिखारी ने पारंपरिक कथानकों पर न तो नाटक लिखा और न स्वांग या तमाशा किया।

समाज में व्याप्त समस्याओं को ही भिखारी ठाकुर ने अपनी कला का विषय बनाया, इन्हीं विषयों पर नाटक लिखा और उनकी प्रस्तुति भी प्रभावी ढंग से दी। यह भिखारी की मौलिकता और उनके साहस का परिचय ही है कि अनेक विरोधों के बावजूद वे अपने नाच में सामाजिक समस्या ही उठाते रहे, कुरीतियों का पर्दाफाश करते रहे। इस तरह नाच–तमाशे को भिखारी ने एक कलात्मक ऊंचाई दिया, उन्हें जीवन यथार्थ से जोड़ा और उन्हें परिवर्तन का प्रभावी हथियार बना डाला।

भिखारी ठाकुर का महत्व इसलिए नहीं है कि वे बढ़िया तमाशा दिखाते थे, बल्कि इसलिए है कि मनोरंजन के माध्यम से उन्होंने समाज में एक सार्थक और व्यावहारिक संदेश दिया। उनकी कला ने बिहार, बंगाल, असम, उत्तरप्रदेश सहित पूरे उत्तर भारत में ऐसा लोकजागरण किया, जो अति प्रभावशाली था, असरदार था। इसने तत्कालीन बंगला और मराठी नवजागरण को लोकजागरण के साँचे में ढालकर तेजी से आगे बढ़ाया। ज्वलंत सामाजिक समस्याएँ भिखारी की लोककला के माध्यम से उजागर होने लगीं और उनके सकारात्मक प्रभाव दिखने लगे। गाँव–जबार, जिला और क्षेत्र के इतिहास–भूगोल, बाढ़–सुखाड़, खेती–बारी, संपत्ति–विपत्ति', अकाल–सुकाल, नदी–नाले, देवी–देवता, आस्था–विश्वास, जाति–वर्ण, पूजा–त्योहार आदि सबका वर्णन भिखारी ने जनता की भाषा भोजपुरी में किया। जनता के लिए किया, इस दृष्टि से भिखारी ठाकुर जन कवि कहलाने के हकदार हैं।

भिखारी ठाकुर का एक और गुण था कि वे आशुकवि थे। 1934 में सावन में गंगा सहित बिहार की तमाम नदियों में भयंकर बाढ़ आई। भिखारी ठाकुर ने उस बाढ़ का वर्णन अपने ''गंगा–स्नान'' नाटक में किया है।

''गंगा जी के भरली अररिया, नगरिया दहात बाटे होए
घरबा में धरबा बहत बाए पुकरबा होखत बाटे होए
गंगा मइया, तनवाँ में अनवाँ मिलत नइखे, नयना से लोर गिरे हो।''

भिखारी ठाकुर ने नाटक और संगीत रूपकों के अलावा ढेर सारी ऐसी कविताएं और गेय मुक्तक लिखे, जिनका मंचन नहीं होता था। वे यदा–कदा, नाच–तमाशों में केवल गाए जाते थे। बहुत सारी रचनाएँ ऐसी होती थीं जिनका न गायन होता थाए न प्रदर्शन परंतु वे सभी सरोकार फरक होती थीं। इनकी कविता और गीतों का महत्व शास्त्रीय से अधिक समाजशास्त्रीय है। उनके गीतों का सरोकार सीधे सामाजिक और सांस्कृतिक समस्याओं से जुड़ते हैं। वे जब ''नाई बहार, भिखारी शंका समाधान, चौवर्ण पदवी, भिखारी जयहिंद खबर'' लिखते हैं तो सीधे तत्कालीन समय और समाज से जुड़ जाते हैं। उनके गीत और कविताओं में समाज की समस्याएँ बोलने लगती हैं। उनके भजन का एक उदाहरण देखें– ''राम कहए राम कहए मन मुंहचोरवा। आई जब नियारए तब गिरावे लगब लोरवा।''

भिखारी ठाकुर की प्रसिद्धि का आलम यह था कि अपने जमाने में ही उस जमाने की मशहूर पत्र–पत्रिका ''सरस्वती, धर्मयुग, माधुरी, चाँद, काडम्बिनी, जनसत्ता, हिंदुस्तान, आर्य महिला, अमृत बाजार पत्रिका, आज आदि में छपने लगे थे। धर्मयुग के संपादक धर्मवीर भारती, प्रसिद्ध साहित्यकार शिवपूजन सहाय, जगदीश चंद्र माथुर, महेश्वराचार्य, भगवती प्रसाद द्विवेदी, कलक्टर सिंह केसरी, चर्चित चित्रकार उपेंद्र महारथी, रामेश्वर सिंह कश्यप आदि ख्याति प्राप्त लेखक–कवि और साहित्यकारों ने भिखारी ठाकुर से संपर्क किया था।

निष्कर्ष

भोजपुरी साहित्य की पढ़ाई अब तो कुछेक कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में हो रही है, भोजपुरी साहित्य पर और अधिक शोध भी हो रहे हैं, इसके समानान्तर भिखारी ठाकुर की भी लोकप्रियता वर्तमान समाज में बढ़ रही है। लोकजागरण के स्वर उनकी रचनाओं को आज भी प्रासंगिक बनाए हुए हैं। भिखारी ठाकुर ने जिस समाज का सपना देखा था उस स्वरूप में ढलता हुआ समाज दिखाई दे रहा है। जातियाँ मिटी तो नहीं हैं लेकिन उनके बीच की दूरियाँ कम हुईं हैं। छुआछूत समाप्त प्राय है। किसी मालिक का अब कोई बंधुआ मजदूर नहीं है। बेटी बेचने वाले अब नहीं रहे, अब समाज ''बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ'' का नारा बुलंद करता है, अब मजदूरी करने कोई बाहर जाता है तो स्त्रियाँ सशंकित होने की बजाए खुश होती हैं कि अर्थोपार्जन की राह पर कोई चल पड़ा है परंतु इतना अवश्य कहना पड़ेगा कि आज भिखारी ठाकुर होते तो वर्तमान समस्याओं पर लिख रहे होते तथा भोजपुरी को और भी सशक्त कर रहे होते।

संदर्भ सूची

1. राही, रामदास (2014) *संग्रह से प्रकाशन तक,* रंग यात्रा, अप्रैल 2014, सूर्य प्रकाशन मंदिर, बीकानेर, राजस्थान।
2. तिवारी, अर्जुन (2014) *भोजपुरी साहित्य का इतिहास,* विश्वविद्यालय प्रकाशन, चेतगंज, बनारस, पृ. 409।
3. *नई कविता के मंच पर भिखारी ठाकुर,* दैनिक हिंदुस्तान, 5 नवंबर 2002।
4. ठाकुर, हरिनारायण (2025) *लोक कलाकार भिखारी ठाकुर,* वाणी प्रकाशन, दिल्ली, पृ. 409।

****